विचार बिन्दु

महान विचार ही कार्य रूप में परिणत होकर महान कार्य बनते हैं। –विनोबा

जब तक पुरस्कार और सम्मान रहेंगे, उनसे हमारी असहमतियां और नाराज़गियां भी रहेंगी

1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन लखनऊ में मुंशी प्रेमचंद द्वारा दिया गया अध्यक्षीय भाषण पढ़ रहा हूं। यह भाषण 'साहित्य का उद्देश्य – प्रगतिशीलता' शीर्षक से सुलभ है। इसको पढ़ते हुए मैं इसके एक अंश पर अटक गया हूं। किस अंश पर अटका हूं, यह ज़िक्र थोड़ा आगे चलकर आ जाएगा।

अब आप इसे मेरा मानसिक विकार समझें या कुछ भी और, मैं इस व्याख्यान के शब्दों को एक अन्य संदर्भ में ठाहण कर विचार करना चाह रहा हूं। इन दिनों राजस्थान में हिंदी साहित्य की दुनिया में पुरस्कारों-सम्मानों का मौसम चल रहा है। सोशल मीडिया बधाइयों से भरा पड़ा है।

और यह बहुत स्वाभाविक और सराहनीय भी है। किसी की खुशी में खुश होना हमारे सहृदय होने का परिचायक होता है। वैसे यह स्थिति जिस तरह आई है उसकी भी सराहना की जानी चाहिए।

पिछले कुछ बरसों से यह रिवायत बन गई है कि नई सरकार बनते ही पिछली सरकार द्वारा नियुक्त साहित्य अकादमी अध्यक्ष से त्यागपत्र तो तुरंत ले लिया जाता है लेकिन नए अध्यक्ष की नियुक्ति प्राय: सत्ता के आखिरी बरस तक टलती रहती है। इसका परिणाम साहित्यकारों को इस रूप में भुगतना पड़ता है कि इस अवधि में देय पुरस्कार व सम्मान उन्हें नहीं मिल पाते हैं।

इस बार भी ऐसा ही हुआ, लेकिन अध्यक्ष की इस बात के लिए सराहना करनी होगी कि उन्होंने सरकार के विलंब के कारण साहित्यकारों का नुकसान नहीं होने दिया। इस बार चार बरसों के पुरस्कार व सम्मान एक साथ दे दिए गए हैं। इससे साहित्यिक बिरादरी को प्रसन्न ही होना चाहिए। लेकिन यहीं मुझे प्रेमचंद का यह भाषण याद आता है। 39;साहित्यकार को अपने भीतर भी एक कमी महसूस होती है और बाहर भी39;। इतने सारे पुरस्कार और सम्मान बंट रहे हैं तो भी साहित्यकार, उनका एक वर्ग दुखी है। दुख के दो-तीन कारण हैं। जिनका नम्बर इतने पुरस्कारों-सम्मानों में भी नहीं आया, उनका दु:ख तो समझ में आता है। वे इन पुरस्कारों के लिए चयन करने वालों की गुण ठाहकता पर सवाल उठाएं, यह बात भी थोड़ी समझ में आती है। यह बात भी कुछ-कुछ समझ में आती है कि जिन्हें छोटा पुरस्कार मिला है वे ख़ुद को बड़े पुरस्कार का पात्र मानते हुए असंतुष्ट हों।

वैसे, पुरस्कारों के लेकर शायद ही कभी ऐसा होता हो कि असहमति, नाराज़गी और विवाद न हों।

पुरस्कार देने वाले प्राय: ज़ाहिर कारणों से गोपनीयता बरतते हैं, जबकि साहित्यकार यह अपेक्षा करते हैं कि सब कुछ पारदर्शी हो। किसी पुरस्कार विशेष के लिए कौन-कौन-सी कृतियां विचाराधीन थीं, पुरस्कार विशेष के निर्णायक कौन थे, और अगर सम्भव हो तो किस-किस ने किस-किस कृति को कितने कितने अंक दिये – वे चाहते हैं कि ये सारी बातें बता दी जाएं! मुझे स्मरण है कि राजस्थान साहित्य अकादमी लम्बे समय तक पुरस्कारों के निर्णायकों के नाम घोषित करती रही है। वह व्यवस्था कब और क्यों बदली गई, मुझे नहीं मालूम। अगर निर्णायकों को यह ज्ञात हो कि पुरस्कार की घोषणा के बाद उनका नाम घोषित कर दिया जाएगा, तो वे अपने निर्णय में अधिक सावधानी बरतेंगे, यह बात बहुत स्वाभाविक है। लेकिन अब दूसरी तरह से सोचें। क्या साहित्य की दुनिया में विज्ञान की तरह सब कुछ निश्चित होता है? क्या सारे निर्णायकों का सोच, उनकी पसंद नापसंद एक-सी और सर्व स्वीकार्य होती है? अगर ऐसा होता तो पुरस्कारों पर कोई विवाद ही नहीं होता। जबकि हक़ीक़त यह है कि साहित्य के और विशेष रूप से हिंदी साहित्य के अधिकांश पुरस्कार विवादों के घेरों में रहे हैं। जब नज़रिया अलग-अलग होगा तो स्वाभाविक है कि मूल्यांकन भी अलग-अलग होगा। और बात यहीं ख़त्म नहीं हो जाती है।

निर्णायकों के नाम घोषित न हों तो भी देर-सबेर उनके नाम लीक हो जाते हैं और फिर शुरू होता है आरोपों-प्रत्यारोपों का अंतहीन सिलसिला, जो बहुत बार बहुत अप्रिय शक्ल भी अख़्तियार कर लेता है। किसका किससे क्या रिश्ता है और किसने किसको कब उपकृत किया था जैसी बातें हम सब सुनते रहते हैं। पुरस्कार से संबंधित सब बातें आधिकारिक रूप से उजागर कर देने पर क्या माहौल बनेगा, कल्पना की जा सकती है। जिन्होंने पुरस्कार के लिए अपनी प्रविष्टि भेजी और जिन्हें पुरस्कार नहीं मिल सका, उनकी रुसवाई की भी कल्पना की जा सकती है। बहुत सारे वरिष्ठ लेखक प्राय: यह कहते हैं कि किसी भी पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित करना लेखक का अपमान है। एक तरह से तो उनका कहना सही है। लेकिन इसी बात का दूसरा पहलू यह भी है कि आखिर क्यों कोई भी पुरस्कार केवल ज्ञात और विख्यात लेखक तक ही सीमित रहे। अगर किसी ने कोई काम किया है और उसे लगता है कि वह काम पुरस्कार के योग्य है और वह उसे निर्णायकों के सामने ले जाना चाहता है तो उसे ऐसा करने से क्यों रोका जाए? हो सकता है एक मिली-जुली व्यवस्था इस समस्या का समाधान कर दे। लेकिन इसमें भी बहुत सारी जटिलताएं हैं।

कुल मिलाकर पुरस्कारों और सम्मानों का मामला बहुत जटिल और विवादास्पद है। मुझे तो नहीं लगता कि इनकी गुत्थियों को किसी भी तरह सुलझाया जा सकता है। आप चाहें तो इसे मेरी हताशा कह दें, मेरा तो मानना है कि जब तक पुरस्कार और सम्मान रहेंगे, उनसे हमारी असहमतियां और नाराज़गियां भी रहेंगी।

हमारा हिंदी समाज पुरस्कारों को लेकर अति संवेदनशील है। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले व्यंग्य लेखों का तो शायद यह सर्वाधिक प्रिय विषय है। पुरस्कार जब दूसरे को मिलता है तो वह पक्षपातपूर्ण होता है, वह जोड़ तोड़ से मिलता है, उसका कोई मूल्य नहीं होता है, उसकी कोई प्रतिष्ठा नहीं होती है। लेकिन जब वही पुरस्कार हमें मिल जाता है तो न केवल वह सच्ची गुण ग्राहकता का परिचायक होता है, तटस्थ, और निष्पक्ष भी होता है। जब कोई पुरस्कार किसी और को मिलता है तो हम यह कहते नहीं थकते हैं कि इतने बड़े रचनाकार को इतना छोटा पुरस्कार स्वीकार नहीं करना चाहिए था, लेकिन जब वही पुरस्कार हमें मिलता है तो हमारा तर्क दूसरा होता है। तब पुरस्कार पुरस्कार होता है, उसमें छोटे-बड़े का कोई भेद नहीं होता है। जब हमारी पसंद के किसी व्यक्ति को कोई पुरस्कार मिलता है तो हमारी दो प्रतिक्रियाएं बहुत आम होती हैं। एक तो यह कि उनके पास जाकर पुरस्कार स्वयं धन्य हुआ है, और दूसरी यह कि यह पुरस्कार उन्हें बहुत पहले मिल जाना चाहिए था। ये हम सब की आम प्रतिक्रियाओं का लब्बे लुआब है!

पिछले चालीस बरसों में मैं कम से कम इतने ही पुरस्कारों का तो निर्णायक रहा ही हूं, और मैं शपथ पूर्वक यह बात कह सकता हूं कि आज तक मुझे किसी भी पुरस्कार प्रदाता ने यह नहीं कहा कि अमुक को पुरस्कार देना है और अमुक को नहीं देना है। हो सकता है कि आपको यह लगे कि यह अनुभव केवल मेरा है, सबका नहीं हो सकता। मैं भी मान लेता हूं कि ऐसा नहीं है कि सब कुछ साफ़ सुथरा ही होता है। मनुष्य है तो उसके राग-द्वेष भी होंगे, पसंद नापसंद भी होगी। पुरस्कारों के निर्णय में नहीं होगी – यह कल्पना ही अव्यावहारिक है। जीवन में यह सब कहां नहीं है? और अगर न भी हो तो हमें ऐसा होने की कल्पना करने से भला कौन रोक सकता है? ऐसे में, मुझे हमेशा लगता है कि पुरस्कारों पर बहुत विवाद बेमानी है। एक प्रयोग करके देखें।

किसी भी पुरस्कार के लिए अपनी एक सूची बनाएं और दोस्तों से उस पर चर्चा करें! क्या सारे दोस्त उस सूची से सहमत मिलेंगे? आप कुछ भी कर लें, सब को संतुष्ट नहीं कर सकते। पुरस्कार विवादास्पद होने के लिए अभिशप्त हैं!

पुरस्कारों के मामले में तो कुछ प्रक्रियाएं भी होती हैं, सम्मानों का मामला अलग होता है। लेकिन हम सबकी प्रतिक्रियाएं यहां भी वैसी ही होती हैं। हमें मिले तो बहुत बढ़िया, हमें न मिले तो एकदम बेकार और पक्षपातपूर्ण। बहुत बार ऐसी रोचक स्थितियां भी सामने आती हैं कि इस बार जब किसी और को पुरस्कार मिला तो हमने सम्मान के खिलाफ, और उसे दिये जाने की प्रक्रिया के खिलाफ़ काफी कुछ कहा, लेकिन जब अगली बार वही सम्मान उसी प्रक्रिया से हमें मिला तो हमने देने वाले के प्रति कृतज्ञ होते हुए उसे प्रफुल्लित भाव से स्वीकार कर लिया। सम्मानों को लेकर हमारा दुहरा सोच इस रूप में भी सामने आता है कि एक तरफ तो हम बार-बार इस बात पर अफसोस व्यक्त करते हैं कि साहित्यकार का कोई सम्मान नहीं है, लेकिन जब उसी साहित्यकार को कोई सम्मान मिलता है तो हम अनेक किंतु परंतु लगाते हुए उस सम्मान को छोटा बताने का प्रयास करते हैं। हमारी पीड़ा एक और होती है। हम चाहते हैं कि हमारा तो सम्मान हो, लेकिन किसी और का भी हो, यह बात हमें ज़रा कम ही पच पाती है।

पुरस्कारों और सम्मानों पर अपनी असहमति या नाराज़गी व्यक्त करने वालों में से अनेक उन लोगों के बारे में अपनी कटु प्रतिक्रियाएं व्यक्त करने में संकोच नहीं करते हैं जो उनकी आवाज़ में अपनी आवाज़ नहीं मिलाते हैं। वे उन पर तरह-तरह के आरोप लगाते हैं, जिनमें से अनेक बहुत अभद्र भी होते हैं। वे यह नहीं सोचते हैं कि यह क़तई ज़रूरी नहीं है कि हरेक असहमत अपनी असहमति को सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त भी करे। और यह भी कहां ज़रूरी है कि हरेक आपकी बात से सहमत भी हो। दुनिया में अकेले ईमानदार और अंतरात्मा वाले आप ही नहीं हैं, इस बात को स्वीकार किया जाना चाहिए। क्या इतने पर बात ख़त्म नहीं हो जानी चाहिए कि जैसा आपको लगा, आपने कह दिया। केवल हमीं पाक साफ और स्वाभिमान वाले हैं, शेष सब गंदे और दुम हिलाऊ हैं, यह कैसा विकृत सोच है?

कुल मिलाकर पुरस्कारों और सम्मानों का मामला बहुत जटिल और विवादास्पद है। मुझे तो नहीं लगता कि इनकी गुत्थियों को किसी भी तरह सुलझाया जा सकता है। आप चाहें तो इसे मेरी हताशा कह दें, मेरा तो मानना है कि जब तक पुरस्कार और सम्मान रहेंगे, उनसे हमारी असहमतियां और नाराज़गियां भी रहेंगी।

अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

शास्त्रार्थ के बिना ही गांधी हार गए

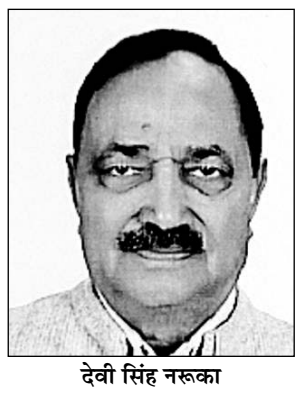

देवी सिंह नरूका

राजस्थान में अजमेर-मेरवाड़ा ही ऐसा क्षेत्र है जहाँ की धरती दो बार बापू '1869-1948 ई.' की पदरज से पवित्र हुई। इस क्षेत्र में उस समय ब्रिटिश सरकार का शासन था। इसी कारण से अजमेर-मेरवाड़ा ही स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों का मुख्य कार्यक्षेत्र रहा है। प्रदेश के शेष सभी भाग देशी राजाओं के अधीन थे। गाँधीजी की मान्यता थी कि आजादी की लड़ाई विदेशी हुकूमत से है। राजा लोग तो अपने ही हैं अत: वे तत्कालीन राजपूताने की किसी रियासत में नहीं गए। यद्यपि प्रदेश के अनेक स्वतंत्रता सेनानियों और अन्य लोगों से उनका सीधा सम्पर्क रहा और निरन्तर सलाह देते रहते थे, जिससे खादी और हरिजन सेवा के कार्य बराबर चलते रहे। सर्वप्रथम अक्टबूर 1921 में गाँधीजी का अजमेर आगमन हुआ।

उस समय अजमेर में फरूखाबाद के शेर सिंह कांग्रेस का काम करते थे। उन्होंने ही गांधीजी को बुलाया था।

अपनी नौ माह की देशव्यापी हरिजन कल्याण यात्रा के अवसर पर 6 जुलाई 1934 को बड़े सवेरे ही राष्ट्रपिता अजमेर से जिले के मुख्य औद्योगिक नगर ब्यावर 'अब जिला' पहुँचे। उनकी इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य हरिजन कल्याण और छुआछूत मिटाने के लिए जनमानस तैयार करना था। ब्यावर पहुँचने पर पंड़ित चन्द्रशेखर 'बाद में जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य' ने अपने साथियों के साथ गाँधीजी को काले झंडे दिखाए। पंडित चन्द्रशेखर गाँधीजी से मिले और उनसे शास्त्रार्थ करने की इच्छा प्रकट की। संभवत: वे गाँधीजी की छुआछूत आदि हरिजन विचारधारा के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ करना चाहते थे। किन्तु गाँधीजी ने विनोद में कहा–"तुम घोषणा कर दो कि बिना शास्त्रार्थ के ही गाँधी हार गया।" इस सभा में ब्यावर के नागरिकों और हरिजनों की ओर से गाँधीजी को मानपत्र दिए गए। हरिजन कोष के लिए 1772 रूपये और कुछ आने गाँधीजी को भेंट किए गए।

इससे एक दिन पूर्व 5 जुलाई सन 1934 को अजमेर में महिलाओं की एक सभा में गाँधीजी ने छुआछूत मिटाने और हरिजनों को समाज में समान दर्जा देने की अपील की। वे यहाँ चर्खा संघ के कार्यकर्ताओं से भी मिले। हरिजन सेवक संघ के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए गाँधीजी ने कहा– "मैं चाहता हूँ कि पूरी सच्चाई और ईमानदारी से हमारे सेवक हरिजनों की सेवा करें। सेवा का फल मेवा ही है। स्वार्थ या किसी राजनीतिक उद्देश्य का तो लेश भी नहीं होना चाहिए। हमारा मुख्य लक्ष्य तो हिन्दू धर्म की शुद्धि है। इसलिए उन लोगों के लिए इस हरिजन प्रवृत्ति में कोई स्थान नहीं हो सकता जो राजनीतिक दृष्टि से इसमें पड़ना चाहते हैं।अजमेर में सार्वजनिक सभा से पूर्व बाबा लालनाथ गाँधीजी से मिले और उन्होंने भी सभा में भाष्ण की इच्छा प्रकट की। गाँधीजी ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया किन्तु उनसे कहा गया कि गाँधीजी के पदार्पण के बाद वह सभा स्थान पर आएं। बाबा लालनाथ अपने साथियों के साथ पहले ही सभा स्थल पर पंहुच गए। उनके साथियों के हाथों में काली झंडिया थी। नागरिकों और लालनाथ व उनके साथियों के बीच मुठभेड़ हो गई। भीड़ में से किसी ने बाबा लालनाथ के सिर पर चोट मार दी जिसमें से खून बहने लगा। गाँधीजी को जब इस बात का पता चला हो उन्हें बड़ा दु:ख हुआ। उन्होंने बाबा लालनाथ को बुलाकर मंच पर अपने पास बिठाया और उनकी चोट पर पट्टी बांधी गई। गाँधीजी ने सार्वजनिक सभा को संबोधित करते हुए कहा, काली झंडी वालों को साथ लेकर बाबा लालनाथ को सभा में आने और हमारे आन्दोलन के विरूद्ध प्रदर्शन करने का पूरा अधिकार था। जिस किसी ने उन पर हमला किया है उसने बहुत बड़ी अशिष्टता की है। काली झंडियाँ सुधारकों का क्या बिगाड़ सकती है। किन्तु पं. लालनाथ पर जो यह वार हुआ है उससे निश्चय ही हरिजन

कार्य को क्षति पहुँची है। धर्म रक्षा या धर्म की सेवा तो आत्म-त्याग और आत्म-संयम के द्वारा ही हो सकती है। मैं तो राजनीतिक वातावरण में भी हिंसा को बर्दाश्त नहीं कर सकता, फिर यह तो धर्म का क्षेत्र है।

गाँधीजी ने बाबा लालनाथ को बोलने के लिए कहा किन्तु ज्योंही वह बोलने लगे तो लोग शेम-शेम की आवाज लगाने लगे और उनका बोलना कठिन हो गया। इस पर गाँधीजी ने लोगों को डांटते हुए कहा आप जो शेम-शेम की आवाज लगा रहे है, तो यह धिक्कार लालनाथ जी के लिए नहीं किन्तु आपके लिए ही है। असहिष्णुता भी एक प्रकार की हिंसा है। जो मनुष्य अपने विरोधियो की बात नहीं सुनना चाहता, वह कदापि धर्माचरण का पात्र नहीं कहा जा सकता। मान लीजिए कि कोई मुझ पर ही घातक हमला कर बैठे तो क्या आप आपे से बाहर हो जायेंगे और पागल की तरह हिंसा पर उतारू हो जायेंगे? ऐसा है तो मैंने व्यर्थ ही आपके आगे जीवन बिताया। ऐसा करके तो आप विशाल आन्दोलन को ही खत्म कर देंगे। पर, यदि आपने संयम से काम लिया तो मेरे शरीर के अंत के साथ-साथ इस अस्पृश्यता का अंत निश्चित है। इस पर लोग चुप हो गए और उन्होंने लालनाथजी का भाषण सुना।

इसी प्रवास के दौरान गाँधीजी स्वतंत्रता सेनानी अर्जुन लाल सेठी के निवास स्थान पर भी गये सेठीजी मदार गटे के बाहर एक मकान में रहते थे। गाँधीजी के प्रति उनकी नाराजगी थी किन्तु गाँधीजी अपने सहयोगियों के साथ उनके घर पर पहुँचे तो सेठीजी गद्-गद् हो गये और उन्होंने तथा उनकी धर्मपत्नी ने गाँधीजी की आरती उतारी और अपनी ओर से एक थैली भेंट की और बच्चों के लिए आशीर्वाद मांगा।

असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में दूसरी बार 8 मार्च सन् 1922 को महात्मा गाँधी अजमेर पधारे। हिन्दु-मुस्लिम एकता और धार्मिक सहिष्णुता के क्षेत्र में अजमेर अगग्री रहा है। गाँधीजी देश में असहिष्णुता का वातावरण बना रहे थे। किन्तु 1922 में अजमेर में आयोजित जमीयतुल उले मा कांफ्रेन्स में प्रस्ताव पारित किया गया कि इस्लाम की रूह के मुताबिक मजहब और इन्साफ की हिफाजत के लिए तलवार उठाना भी जायज होगा। गाँधीजी की प्रेरणा से उलेमाओं का यह प्रस्ताव बदलवाया गया। उन्होंने स्वयं ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में उलेमाओं की बैठक में भाग लिया। बताया जाता है कि गाँधीजी पहले गैर मुस्लिम थे जिन्होंने ख्वाजा साहेब की दरगाह में धार्मिक बैठक में तकरीर की।

राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री ने अपने संस्मरण में लिखा है–

"सबसे अधिक मार्मिक बात गाँधी से मेरी 15 जनवरी 1948 के आस-पास हुई थी। बात करते-करते गाँधीजी ने कहा– "हीरालाल! वल्लभ भाई और जवाहरलाल मेरी बात नहीं सुनते है, अब मैं दूसरा वल्लभ भाई और दूसरा जवाहरलाल कहाँ से लाऊँ" इन शब्दों के साथ गाँधीजी की आँखों में आंसू छलक आये। वही मेरा गाँधीजी का अंतिम दर्शन था।

–देवी सिंह नरूका,
वरिष्ठ लेखक व पत्रकार

कृषि शोध एवं प्रौद्योगिकी प्रयोग से देश आगे बढ़ा : डॉ. चौधरी

- **केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) जोधपुर का 65वां स्थापना दिवस मनाया**
- **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ. चौधरी ने कृषि पारिस्थितिकी पर्यटन पार्क का शुभारम्भ किया**

जोधपुर, (कासं)। केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) जोधपुर का 65वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के उप महानिदेशक (एनआरएम) एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एस.के. चौधरी ने कहा कि आईसीएआर संस्थानों की कृषि शोध उपलब्धियों एवं कृषि प्रोद्योगिकियों से देश आत्मनिर्भर बना परिषद् ने किसानों एवं देश की आवष्यकता को पूरा किया।

खाद्यान्न भण्डार भरे होने से कोरोनाकाल में घर बैठे लोगों को खाद्य सामग्री उपलब्ध करा पाये। काजरी में सामूहिक सकारात्मक प्रयास योगदान से प्रगति हुई है। रेगिस्तान में हरे भरे खेत खलिहान कृषि की उन्नित देखकर ख़ुशी होती है।

डॉ. चौधरी ने कृषि पारिस्थितिकी पर्यटन पार्क का शुभारम्भ किया। इस पार्क में शुष्क क्षेत्रों के पारिस्थितिकी तंत्र का अभिवेदन करने वाले 31 ब्लाक प्रदर्शित किये गये हैं। काजरी निदेशक तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. ओपी यादव ने अतिथियों का साफा पहनाकर स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। उन्होंने गत वर्ष की कृषि उपलब्धियों कार्यक्रमों गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

कार्यक्रम में आउटस्टेडिंग वर्कर अवार्ड डॉ. पीसी महाराणा डॉ. राकेश पाठक डॉ. डीवी सिंह डॉ. एचआर महला तथा बेस्ट वर्कर के लिए वैज्ञानिक श्रेणी में डॉ. आरएन कुमावत एवं डॉ. अर्चना वर्मा प्रशानिक श्रेणी में हेमा राम तकनीकी श्रेणी में मुकेश गहलोत वीरेन्द्र कुमार हर्ष रामनिवास सहायक श्रेणी में जमना देवी को प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। आईसीएआर, नई दिल्ली द्वारा काजरी की 11 कृषि प्रौद्योगिकिया अनुमोदित की गई है। कृषि प्रौद्योगिकियों एवं विभिन्न उपयोगी कृषि माडल विकसित करने के लिए डॉ. प्रदीप कुमार डॉ. एसपीएस तँवर डॉ. आरएन कुमावम डॉ. वीएस राठौड़ डॉ. प्रवीण कुमार डॉ. धीरज सिंह डॉ. प्रियब्रत सान्तरा डॉ. एनआर पंवार को प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया।

काजरी जोधपुर के पूर्व निदेशक एवं कार्यक्रम के विशिस्ट अतिथि डॉ. केपीआर विटल एवं डॉ. प्रताप नारायण ने अपने संस्मरण सुनाये एवं अनुभव साझा किये। केन्द्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान गोवा के निदेशक एवं विशेष अतिथि डा. प्रवीण कुमार ने कहा कि जलवायु परिर्वतन हो रहा है ऐसे में काजरी की तकनीकियों अन्य राज्यों के लिए भी बहुत उपयोगी होगी। कार्यक्रम संयोजक डॉ. एके पटेल ने तथा संचालन गजे सिंह जोधा एवं डा. सोमा श्रीवास्तव ने दिया। कार्यक्रम में डॉ. एके पटेल डॉ. पीसी महाराणा डॉ. सुमन्त व्यास डॉ. एसपीएस तँवर डॉ. पी. सान्तरा सुरेश कुमार सुनीता आर्य डॉ. आरके कांकाणी डॉ. एचएल खुशवाहा डॉ. धीरज सिंह आईआर मीणा ने अहम भूमिका निभायी। समारोह में सेवानिवृत्त एवं कार्यरत वैज्ञानिकों अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. कैलाश सोडाणी का वी.एम.ओ.यू. में अभिनंदन

- **कुलपति सोडाणी के नेतृत्व में नैक "ए" ग्रेड विवि बना वीएमओयू**
- **वीएमओयू में सोडाणी के कार्यकाल का एक वर्ष पूरा होने पर अभिनंदन**

उदयपुर, (कासं)। वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय (वीएमओयू) में शनिवार को कुलपति प्रो. कैलाश सोडाणी के कार्यकाल का एक वर्ष पूरा होने पर उनका अभिनंदन किया गया। विश्वविद्यालय के पूरे स्टाफ ने गांधी भवन में प्रोफेसर सोडाणी को फूल-मालाओं से लाद दिया। प्रोफेसर सोडाणी के कार्यकाल की उपलब्धियों में सबसे बड़ी उपलब्धि रही विवि को नैक से 'ए' ग्रेड मिलना। इसके अलावा शिक्षकों के प्रमोशन करना एक अहम उपलब्धि रही।

कुलपति प्रो. कैलाश सोडाणी का वीएमओयू में अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

महिलाओं को नि:शुल्क शिक्षा देने में वीएमओयू एकमात्र विश्वविद्यालय बना। साथ ही दो डिग्रियों की पढ़ाई भी एकसाथ कराने वाला विवि वीएमओयू ही बना। पुरानी पेंशन को लागू कराने में कुलपति प्रो सोडाणी आगे रहे। इसके अलावा देशभर के सभी मुक्त विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की जयपुर में कांफ्रेंस कराने का श्रेय भी कुलपति प्रो सोडाणी को जाता है, इसमें राज्यपाल महोदय ने भी अध्यक्षता की। क्षेत्रीय केन्द्र अजमेर के लिए भवन हेतु सरकार से निशुल्क जमीन का आवंटन कराने में भी प्रो. सोडाणी की भूमिका अहम रही। रुके हुए शोध कार्य को आरंभ कराने और कुछ छात्रों की रुकी पीएचडी को अवार्ड कराने और ऑनलाइन गृहकार्य में आई बाधाओं को दूर करने में प्रोफेसर सोडाणी के प्रबंधन कौशल को सभी ने जमकर सराहा।

अपने उद्बोधन में प्रोफेसर सोडाणी ने कहा कि सभी लोगों के मिलकर कार्य करने से ही परिणाम अच्छे मिलते हैं। उन्होंने कहा कि आज हम 'ए' ग्रेड विवि के तौर पर जाने जा रहे हैं और आने वाला समय तकनीक का है, अब हमें ऑनलाइन कोर्सेज शुरू पर जोर देना होगा। प्रो. सोडाणी ने कहा कि अब प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है और बाजार में टिकने के लिए हमें मजबूत बनना होगा। कार्यक्रम में नैक में उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन संदीप हुडा ने किया।

बार कौंसिल ऑफ राजस्थान की बैठक में कई विषयों पर चर्चा

जोधपुर, (कासं)। बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के कार्यालय में बार कौंसिल ऑफ उतर प्रदेश के उपाध्यक्ष अनुराग पाण्डेय के नेतृत्व में बार कौंसिल ऑफ उतर प्रदेश के प्रतिनिधिमंडल के साथ बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के अध्यक्ष, रामप्रसाद सिंगारिया के साथ बैठक आयोजित हुई। बार कौंसिल ऑफ उतर प्रदेश के उपाध्यक्ष एवं प्रतिनिधिमंडल ने अधिवक्ताओं के हितार्थ एवं लाभार्थ के लिए कई विषयों पर विस्तृत चर्चा की, जिनमें प्रमुख मुद्दे अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम, अधिवक्ता वेलफेयर फंड, ऑनलाईन पंजीकरण व नवीनीकरण प्रक्रिया, तत्काल पंजीकरण प्रक्रिया, सदस्यगणों सचिव व कर्मचारीगण के-यात्रा भत्ता, किसी सदस्य की आकस्मिक मृत्यु होने पर नये सदस्य के चुनाव संबंधी नियम आदि चर्चा के विषय रहे। बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के अध्यक्ष, रामप्रसाद सिंगारिया ने बार कौंसिल ऑफ उतर प्रदेश के उपाध्यक्ष अनुराग पाण्डेय तथा अन्य सदस्यों का साफा व माला पहनाकर अभिनंदन किया।

बैठक में बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के अध्यक्ष, राम प्रसाद सिंगारिया तथा बार कौंसिल ऑफ उतर प्रदेश के उपाध्यक्ष अनुराग पाण्डेय व अन्य सदस्य पांचू राम मौर्य (पूर्व अध्यक्ष, बार कौंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश), जानकी शरण पाण्डेय (पूर्व अध्यक्ष, बार कौंसिल ऑफ उतर प्रदेश) एवं विनोद कुमार पाण्डेय उपस्थित थे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 2 अक्टूम्बर, 2023

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, भरणी नक्षत्र सांय 6:24 तक, हर्षण योग प्रात: 10:28 तक, विष्टि करण प्रात: 7:37 तक, चन्द्रमा रात्रि 12:15 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मेष, मंगल-कन्या, बुध-कन्या, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा प्रात: 7:37 तक रहेगी। आज चतुरदशी तिथि का क्षय हुआ है। आज भरणी और चतुर्थी तिथि का श्राद्ध है। आज चतुरथी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:31 तक, शुभ 9:20 से 10:48 तक, चर 1:44 से 3:13 तक, लाभ-अमृत 3:13 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:23, सूर्यास्त 6:10

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह
शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में प्रगति होगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। संभावित धन प्राप्ति में विलम्ब होगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण मामलों में परिजनों से सहयोग मिलेगा। घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मीन
आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक प्रतिष्ठा का ध्यान रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।